शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

मिशन शिक्षण संवाद

काव्य मंजरी

मिशन शिक्षण संवाद

शैक्षिक कविताओं का संकलन

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

01

अर्जुन

था वह दुनिया का, सर्वोत्तम धनुर्धारी।
कर्मों से था उत्तम, वह तो सदाचारी।।
वो अर्जुन था, वह अर्जुन था।।

महाराज पांडु थे पिता, कुंती थी माता।
युधिष्ठिर, भीम, सहदेव, नकुल उनके भ्राता।।
वो अर्जुन था, वह अर्जुन था।।

गुरु द्रोणा का था, वह तो उत्तम शिष्य।
प्रभु श्री कृष्ण का, था वो तो अतिप्रिय।।
वो अर्जुन था, वह अर्जुन था।।

कुरुक्षेत्र के युद्ध में, जिनके कृष्ण सारथी थे।
चक्रव्यूह को भेदने वाले, वही महारथी थे।।
वो अर्जुन था, वह अर्जुन था।।

परम वीर अभिमन्यु, के थे वो तो पिता।
प्रतिज्ञा की खातिर, सजा ली अपनी चिता।।
वह अर्जुन था। वह अर्जुन था।

रचना-
श्रीमती पूनम गुप्ता "कलिका"
(स०अ०) प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, जनपद अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

02

कर्ण

दानवीर संग महावीर थे,
महाभारत के पात्र महान।
रहे धनुर्धर अतुलित जिनकी,
कर्ण नाम से थी पहचान।

कुन्ती रहीं वास्तविक माता,
पिता सूर्य भगवन उनके।
सूत वर्ण में पालन-पोषण,
अंग देश के राजा थे।

दुर्योधन था परम मित्र,
कौरव युवराज जिसे कहते,
मित्रता निभाए सूर्यपुत्र,
युद्ध में साथ देकर के।

कवच और कुण्डल निज दान में,
इन्द्र देव को निःसंकोच दिए।
निज स्वर्ण दंत श्रीकृष्ण को दे,
वे परम मोक्ष को प्राप्त किए।

प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़े,
वो महायोद्धा महाभारत के।
वह नहीं मिला उनको जीते,
जो पाने के अधिकारी थे।

रचना
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा०वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

03

एकलव्य- (महान शिष्य)

निषाद राजा हिरण्यधनु के पुत्र को जग ने जान लिया।
द्रोणाचार्य को ही एकलव्य ने मानस गुरु मान लिया।।

कहते हैं बच्चों! धनुर्विद्या सीखने,
एकलव्य द्रोणाचार्य के आश्रम आया।
गुरु द्रोण ने निषाद पुत्र होने के कारण,
एकलव्य को अपना शिष्य नहीं बनाया।।

एकलव्य ने रखी गुरु के प्रति निष्ठा,
वन में गुरु द्रोण की मूर्ति बनायी।
एकाग्रचित्त, लगन से सीखी धनुर्विद्या,
अल्पकाल में ही अति निपुणता पायी।।

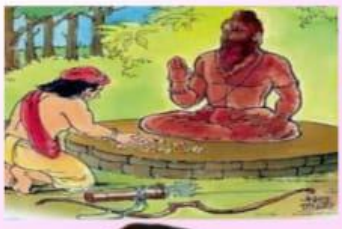

वन में एक दिन पाण्डवों के कुत्ते ने भौंककर,
एकलव्य की एकाग्रता को भंग किया।
एकलव्य ने तीरों से बिना चोटिल किए ही,
भौंकते हुए कुत्ते का मुँह बन्द किया।।

उनके इस धनुकौंशल ने द्रोण को चकित किया ।
गुरु दक्षिणा में उनसे अंगूठा द्रोण ने माँग लिया।।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
संवि० पूर्व मा० विद्यालय- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढायें। 9458278429

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

04

शिशुपाल

शिशुपाल था चेदि राज्य का स्वामी।
जहाँ के लोग सदाचारी और ज्ञानी।।

रुक्मणी ने जब किया,
विवाह कृष्ण से।
समझ अपमान हुआ,
आगबबूला कृष्ण से।।

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में,
हुआ कृष्ण का मान।
देखकर उनका यश,
सह न सका अपमान।।

बोला अपशब्द प्रभु को,
किया नही सम्मान।
सौ कटु शब्दों पर,
लिया कृष्ण ने प्रण महान।।

काल के वशीभूत शिशुपाल,
की रुकी नहीं तलवार।
प्रणवश कृष्ण ने किया,
सुदर्शन से वार।।

सर कट गिरा भूमि में,
आत्म-ज्योत कृष्ण में समा गयी।
भगवान के बैरी की भी,
परम गति रमा गयी।।

रचना
रेनू (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़ी
बडागाँव, वाराणसी।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढायें। 9458278429

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

05

वीर अभिमन्यु

द्वापर युग में पाण्डु पुत्र,
अर्जुन की जो सन्तान।
माता जिनकी सुभद्रा ऐसे,
अभिमन्यु वीर महान।।

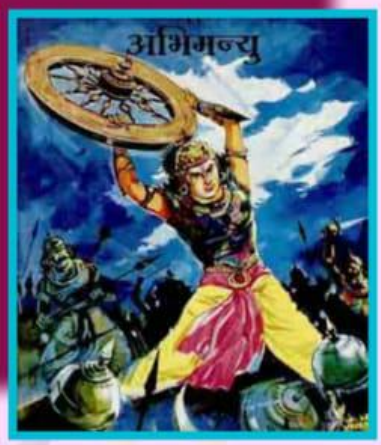

युद्ध महाभारत का जिसमें,
रचा गया चक्रव्यूह निराला।
सात द्वार और सात महारथी,
घिरकर फँसा अभिमन्यु अकेला।।

वीर अर्जुन ने पत्नी को,
व्यूह-भेदन कला थी सुनायी।
माँ के गर्भ से वीर ने सुनकर,
व्यूह भेदने की कला थी पायी।।

दिखा पराक्रम वैरीजन को,
कौरव सेना में ढाया कहर।
सोलह वर्ष की अल्पायु में,
अभिमन्यु हो गया अमर।।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना

शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
पू०मा० वि० स्योढ़ा,
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

06

दुर्योधन

धृतराष्ट्र, गान्धारी का पहला पुत्र दुर्योधन,
गदायुद्ध का पराक्रमी महारथी था।
बलदाऊजी का प्रिय शिष्य था,
पाण्डवों में युधिष्ठिर से छोटा था।।

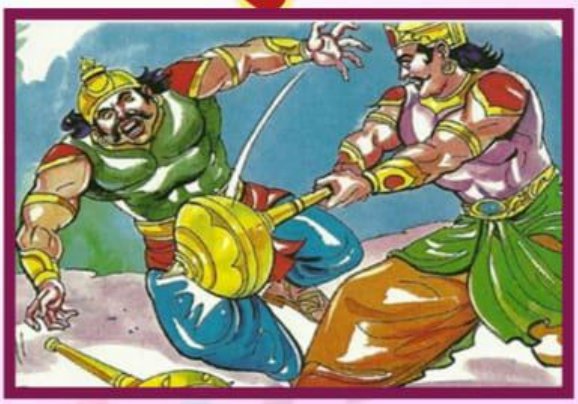

मामा शकुनि, दुशासन भाई,
कर्ण, दुर्योधन का प्रिय मित्र था।
दुराचरण, कुटिलता के कारण वह,
भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य को कम प्रिय था।।

द्यूत-क्रीडा में शकुनि, दुर्योधन के छल से,
युधिष्ठिर ने राज्य, भाई, द्रौपदी हारी।
चीरहरण दुशासन ने किया द्रौपदी का,
श्रीकृष्ण ने की रक्षा जब वो सभा में पुकारी।।

दुर्योधन के असंख्य कुकृत्यों के कारण ही,
कौरव-पाण्डवों में महाभारत हुआ।
पाण्डव जीते कौरव हारे युद्ध में,
भीम द्वारा दुर्योधन का भी वध हुआ।।

रचना- जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिलवर नगर- 1
बागपत, बागपत

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढायें। 9458278429

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

07

माद्री

मद्र देश की राजकुमारी,
राजा शल्य की सहोदरा।
प्राणप्रिया बनी राजा पाण्डु की,
नकुल सहदेव की वह मैया।।
किंदम मुनि के एक शाप से,
ग्रसित पाण्डु जीवन भर थे।
स्त्री संग यदि रमण करेंगे,
क्षणिक जीवन न पाएँगे।।

भार्या की अनुपम सुन्दरता,
मोहित कर गयी पाण्डु का मन।
शाप भूल निकट गए माद्री के,
प्राणों ने छोड़ दिया जीवन।।
निज पुत्रों को सौंप कुन्ती को,
माद्री पति संग सती हुई।
अर्धांगिनी महाराज पाण्डु की,
संग पति के स्वर्ग चली।।

रचना - सीमा मिश्रा (स०अ०)
कंपोजिट विद्यालय काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

08

विदुर जी

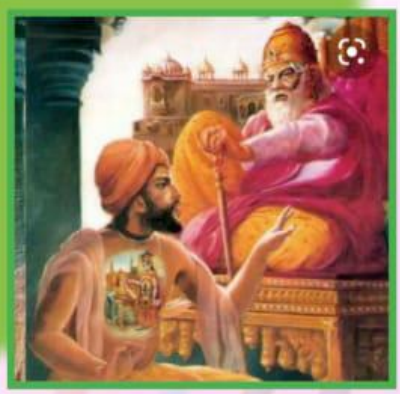

दासी के गर्भ से जन्म लिया,
ज्ञानी थे विदुर जी अपार।
हस्तिनापुर के प्रधानमन्त्री,
किया नीतिगत था व्यवहार।।

नीतिवान सच्चरित्र रहे,
दिया धर्म का साथ हमेशा।
विचलित होकर बोल पड़े,
जब चीरहरण द्रोपदी का देखा।।

विदुर नीति में क्या अच्छा,
क्या बुरा है ये बतलाया।
होते दुष्परिणाम युद्ध के,
धृतराष्ट्र को था समझाया।।

विदुर नीति है महाभारत में,
नीति-युक्त देती उपदेश।
होती जीत सदैव धर्म की,
देती ये जग को सन्देश।।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना
अनुपम वर्मा (स०अ०)
क० उ० प्रा० वि० बहादुरपुर
बंकी, बाराबंकी

शिक्षा का उत्थान

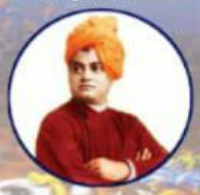

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

09

द्रोणाचार्य

भीष्म के बाद द्रोणाचार्य का नम्बर था,
नतमस्तक चरणों में सारा अम्बर था।
थे महान धनुर्धर वो गुरु द्रोणाचार्य जी,
कौरव और पाण्डव दोनों के आचार्य जी।।

देव बृहस्पति का वे एक अवतार थे,
श्रेष्ठ धनुर्धर ही नहीं, विशेष चमत्कार थे।
इनका विवाह कृपि के साथ हुआ था,
अश्वत्थामा पुत्र महापराक्रमी हुआ था।।

हस्तिनापुर की रक्षा में जीवन लगा दिया,
लेकिन कौरवों को कभी न दगा दिया।
एकलव्य का अंगूठा गुरु दक्षिणा में माँग लिया,
अर्जुन हो सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर, प्रण ये पूरा किया।।

युद्ध के ग्यारहवें दिन, झूठा समाचार आया,
अश्वात्थामा मारा गया, खुद को लाचार पाया।
द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न ने सिर कलम किया,
अपना जीवन हस्तिनापुर को अर्पण किया।।

रचना
भुवन प्रकाश (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि० पिपरी नवीन
मिश्रिख, सीतापुर

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढायें। 9458278429

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

10

घटोत्कच

भीम व हिडिम्बा का पुत्र,
घटोत्कच महान था।
महाभारत में उसने रोशन,
किया अपना नाम था।।

कर्ण के पास अमोघ शक्ति,
जैसा अचूक हथियार था।
खाली नही जाता था कभी,
इसका कभी भी वार था।।

जब घटोत्कच कौरवों पर,पड़ने लगा था भारी।
कर्ण ने अमोघ शक्ति, मारने की थी तैयारी।।
ये शक्ति अर्जुन के लिए उसने बचा कर रखी थी,
घटोत्कच पर मारा इसको कौरवों की जान बचानी थी।।

रचना-
सुधांशु श्रीवास्तव (स०अ०)
प्रा० वि० मणिपुर
ऐरायां, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

11

पांडु

वेदव्यास के वरदान से,
अम्बालिका को पुत्र हुआ।
हस्तिनापुर के विचित्रवीर्य
के घर इनका जन्म हुआ।।

धृतराष्ट्र न बन सका राजा,
क्योंकि वह था अंधा।
पांडु ने राजपाट सम्भाला,
योद्धा था वह मन का चंगा।।

कुंती और माद्री,
दो पत्नी थी जिनकी।
ऋषि के श्राप से देखो,
मृत्यु हो गयी इनकी।

रचना-
आकांक्षा मिश्रा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय सिकन्दरपुर
सुरसा, हरदोई

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढायें। 9458278429

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

12

भीम

दस हजार हाथियों के बल समान,
गदा युद्ध कला में कुशल कमान।
पवनदेव के वरदान स्वरूप,
कुन्ती से उत्पन्न भीम बालरूप।।

पत्नी द्रोपदी और हिडिम्बा,
पिता पाण्डु और कुन्ती है अम्बा।
पुत्र घटोत्कच और सुतसोम,
युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव भ्राता।।

भीम ज्येष्ठ युधिष्ठिर के सबसे प्रिय,
हुए युद्ध में पारंगत और सक्रिय।
राजवंश कुरुवंश हस्तिनापुर में जन्में,
जरासंधजीत, वृकोदर इन्हें ही जानें।।

बकासुर और हिडिंब का वध किया,
मगध शासक जरासंध को परास्त किया।
द्रोणाचार्य और बलराम के शिष्य,
दुर्योधन का वध कर महाभारत का अन्त किया।।

रचना- किरन (स०अ०)
प्रा०वि० बिजौली
अमौली, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

13

श्रीकृष्ण

जब-जब धरा पर बढ़ता अधर्म, अत्याचार,
धर्म-ध्वजा फहराने को होता ईश्वर अवतार।
मुरलीधर, वंशीधर, चक्रधर हैं नाम अनेक,
श्रीकृष्ण भी कहते,जो हैं विष्णु का रूप एक।।

देवकी और यशोदा नन्दन कहलाये,
भक्त वत्सल बन मनमोहक छवि दिखलाये।
किया अन्त सभी अधर्मी, पापियों का,
अन्तिम सत्य बताया ज्ञान कराया गीता का।।

शान्ति दूत बनकर जा पहुँचे हस्तिनापुर,
लड़े धर्म की खातिर सारथी बनकर।
हुआ शंखनाद जब महाभारत युद्ध का,
घेर लिया अर्जुन को मोह परिजनों का।।

निष्काम कर्म का उपदेश सभी को दिया,
विश्व रूप का दर्शन अर्जुन को करा दिया।
शरीर है मिथ्या, अजर-अमर है आत्मा,
योगेश्वर श्रीकृष्ण जी, जो हैं परमात्मा।।

रचना-प्रतिमाउमराव(स०अ०)
कम्पोजिटविद्यालय अमौली
अमौली, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

14

अश्वत्थामा

गुरु द्रोण माता कृपि का पुत्र,
वीर योद्धा व महान धनुर्धर।
शिव कृपा से जन्मा पुत्र,
अश्वत्थामा अमर सपूत।।

जन्म से थी मस्तक मणि,
दैत्य दानव से निर्भय रखती।
कौरव पाण्डव के साथ पायी शिक्षा,
शस्त्र शास्त्र की पूरी दीक्षा।।

महाभारत युद्ध के महाबली,
कौरव सेना के सेनापति।
छल से हुआ जो पिता का वध,
क्रोधित हो किया पाण्डवपुत्रों का वध।।

पृथ्वी पर है विचरण अब तक,
श्रीकृष्ण के श्राप से ना मुक्त अब तक।
50,00 वर्षों तक हैं श्रापित,
अश्वत्थामा अभी हैं जीवित।।

रचना-
सुमन पांडेय (प्र.अ.)
प्रा.वि.टिकरी मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

15

धर्मराज युधिष्ठिर

धर्मराज के मानस पुत्र,
माँ कुन्ती और पांडु के सुत।
भाईयों में सबसे बड़े,
सत्य पर हमेशा डटे रहे।।

युधिष्ठिर नाम उन्होंने पाया,
सदा सत्य का मार्ग अपनाया।
भाला फेंकने में थे वे निपुण,
विनम्रता, गम्भीरता थे उनके गुण।।

राजसूय यज्ञ कर युधिष्ठिर ने,
कई वर्षों तक राज्य किया।
तत्पश्चात पत्नी भाईयों संग,
मोक्षधाम को प्रस्थान किया।।

कपटी शकुनि के द्यूत क्रीड़ा के हुए शिकार,
भार्या संग अनुजों को भी गए जुए में हार।
इंद्रप्रस्थ का राज्य छिना, मिला इन्हें वनवास,
महाभारत का युद्ध जीत, बने चक्रवर्ती सम्राट।।

रचना- इला सिंह (स०अ०)
उच्च प्रा०वि०पनेरूवा
अमौली,फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

16

कुन्ती

कुन्ती, प्रथा, चिरकुमारी,
जस नाम तस कथा थी।
यदुवंशी नृप सूरसेन की,
पंच कन्याओं में से एक थी।।

बहन वासुदेव व पत्नी पाण्डु की,
हस्तिनापुर की महारानी थी।
राजमाता इन्द्रप्रस्थ की,
वीर पाण्डवों की जननी थी।।

देवताओं के आवाहन का,
दुर्वासा ऋषि ने वरदान दिया।
कर्ण, युधिष्ठर, भीम, अर्जुन का,
जन्म वरदान से सम्भव हुआ।।

गान्धारी व धृतराष्ट्र संग वन में,
महाभारत युद्ध पश्चात गमन किया।
महाभारत काल में कुन्ती ने,
महत्वपूर्ण योगदान दिया।।

सुप्रिया सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय बनियामऊ
मछरेहटा, सीतापुर।

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

17

शकुनी

गान्धारी का विवाह पिता ने,
जब एक जन्मान्ध से कराया।
बहन का अन्धे को पति मानना,
नहीं शकुनी के मन को भाया।।

उसने उस दिन अपने मन में,
ठान शकुनी ने लिया प्रण।
कुरूवंश का नाश करुँगा,
यह निश्चय लिया दृढ़।।

उसने अपनी कुटिल चाल से,
कुरुक्षेत्र का युद्ध कराया।
दुर्योधन को पाण्डवों से,
छल करने को उकसाया।।

चौसर के खेल से पाण्डवों का,
सारा राज्य-पाट छिनाया।
कुटिल नीति से शकुनी ने,
महाभारत का युद्ध कराया।।

रचना- शहनाज़ बानो (स० अ०)
पू० मा० वि० भौंरी- 1
मानिकपुर, चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान

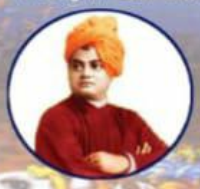

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

18

बलराम

धरती पर करने लगे, दुर्जन अत्याचार।
शेषनाग संग विष्णु तब, लिया मनुज अवतार॥
वासुदेव और देवकी, की सप्तम सन्तान।
संकर्षण कर गर्भ का, माया रची महान॥

मात रोहिणी का हुआ, अदभुत गर्भाधान।
जन्मे भादों कृष्ण छठ, संकर्षण भगवान॥
अग्रज थे श्रीकृष्ण के, शेषनाग अवतार।
रौहिणेय, रेवतीरमण, हरते भू का भार॥

संकर्षण, बलदेव अरु, हलधर इनके नाम।
शितिवासा, मुसली, हली, जय जय श्री बलराम॥
पत्नी इनकी रेवती, लम्बी इक्कीस हाथ।
लम्बाई सामान्य तब, करते रेवतीनाथ॥

निशथ और उल्मुख सहित, दो थे इनके पुत्र।
पुत्री थी इक वत्सला, सुन्दर सुघड़ सुचित्र॥
पूर्ण हुए उद्देश्य सब, सिद्ध हुए सब काम॥
मनुज देह का त्याग कर, गए लौट निज धाम॥

रचना
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

शिक्षा का उत्थान

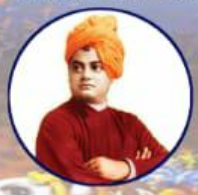

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

19

नकुल

आइये महाभारत के एक पात्र को जानें,
नकुल पाँच पाण्डवों में से एक थे।
दैव चिकित्सक अश्विनी के वरदान से,
जन्मे ये सहदेव के जुड़वाँ बन्धु नेक थे।।

नकुल का अर्थ होता है परम विद्वता,
काम देव से होती है नकुल की तुलना।
नकुल का चित्रण एक रूपवान, प्रेमयुक्त,
और वीर योद्धा के रूप में हुआ।।

अन्य राजकुमारों की तरह नकुल ने,
द्रोणाचार्य से प्राप्त की थी शिक्षा।
नकुल ने धर्म शास्त्र, नीति तथा,
पशु चिकित्सा में हासिल की दीक्षा।।

इनके निरमित्र और शतानीक दो पुत्र थे,
द्रौपदी और करेणुमती इनकी पत्नी थीं।
अज्ञात वास में नकुल ने सेवक के रूप में,
गाय और अश्वों की देखभाल की।।

रचना- ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

शिक्षा का उत्थान

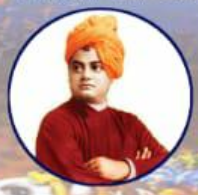

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

20

सहदेव

सहदेव महाभारत के पाँच पाण्डवों में,
पाण्डु-माद्री के सबसे छोटे पुत्र थे।
देव चिकित्सक अश्विनी के वरदान से,
जन्मे नकुल के जुड़वाँ बन्धु थे।।

पुरुषोचित सौंदर्य के आदर्श माने जाते,
इन्हें त्रिकालदर्शी भी है कहा जाता।
पशुपालन शास्त्र, चिकित्सा में दक्ष,
योद्धा और ज्योतिष विद्या के भी थे ज्ञाता।।

भविष्य में होने वाली हर,
घटना को पहले ही जान लेते थे।
कृष्ण के शाप के कारण मृत्यु के भय से,
किसी को भविष्य नहीं बता पाते थे।।

अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहाँ,
इन्होंने पशु देखरेख का कार्य किया।
महाभारत के महान योद्धा बनकर,
शकुनि ओर उसके पुत्रों का संहार किया।।

रचना- रीना कुमारी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

21

द्रोपदी

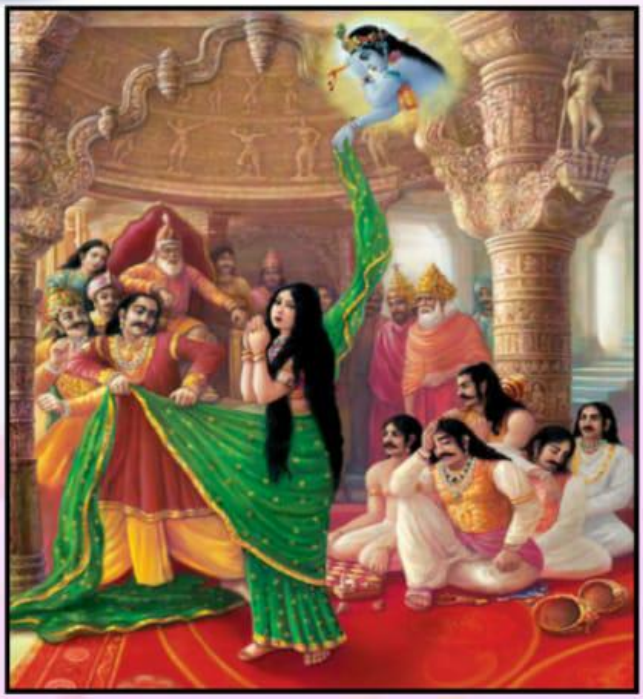

महाराज द्रुपद की बेटी थी वो,
द्रोपदी था नाम जिसका।
यज्ञ के ताप से निकली थी वो,
यज्ञ सैनी था नाम उसका।।

पत्नी बनकर अर्जुन की,
मन में खुशी का फूल खिला।
पर पांच भाइयों में बटकर के,
पांचाली का नाम मिला।।

पांडवों की थी कुलवधु,
पर ना उसको सम्मान दिया।
भरी सभा दुर्योधन ने,
कैसा था अपमान किया?

सारे शीश थे झुके हुए,
फिर गोविंदा को पुकार लिया।
तब कृष्ण ने चीर बढ़ा कर के,
कृष्णा का उधार दिया।।

रचना

हेमलता गुप्ता (स० अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

22

भीष्म पितामह

माघ मास की कृष्ण पक्ष की,
नवमी तिथि को हस्तिनापुर की।
पावन धरती पर राजा शांतनु के,
क्षत्रिय कुल में जन्मे भीष्म पितामह।।

माँ गंगा के अष्टम पुत्र देवव्रत,
अपने पिता की इच्छापूर्ति की,
खातिर आजीवन ब्रह्मचर्य की,
प्रतिज्ञा लेने वाले थे भीष्म पितामह।।

भगवान परशुराम से शिक्षा ली,
महाभारत के युद्ध हस्तिनापुर की ,
रक्षा के लिए पांडवों के खिलाफ,
युद्ध करने वाले वीर थे भीष्म पितामह।।

58 दिनों तक बाणों की शैया,
पर रहकर 150 वर्षों तक जीवित।
रहकर शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि,
इच्छा से प्राण त्यागने वाले थे भीष्म पितामह।।

रचना-
साधना (प्रधानाध्यापिका)
कंपोजिट स्कूल ढोढ़ियाही
तेलियानी, फतेहपुर

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

23

शिखंडी

कथा शिखंडी बड़ी अजब है,
नर में नारी यही ग़ज़ब है।
स्त्री रूप में जन्म लिया,
यक्ष ने फिर पुरुषत्व दिया।।

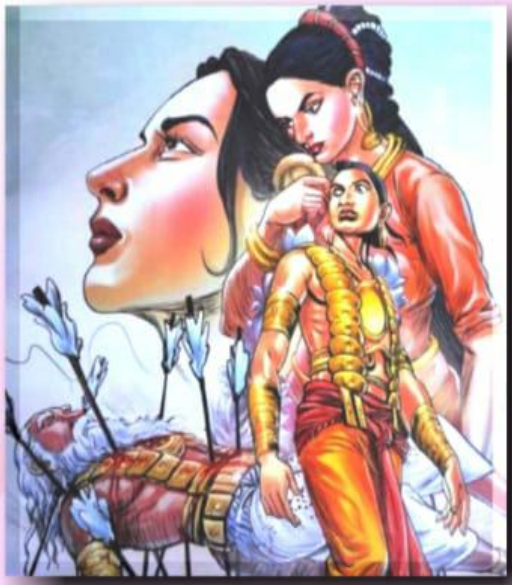

अम्बा ने किया प्रण यह धारण,
बनूँ भीष्म का मृत्यु कारण।
काशीराज की जेष्ठ पुत्री अम्बा,
पुनर्जन्म में शिखंडी यही अचम्भा।।

जन्मा शिखंडी द्रुपद के देश,
अम्बा ने लिया शिखंडी वेश।
आकाशवाणी का था वाचन,
पुत्र की भांति पुत्री पालन।।

शिखंडी में अम्बा को पहचान,
भीष्म ने त्यागा तीर-कमान।
ले भीष्म प्राण अर्जुन शर शय्या,
हुई अम्बा की अब पूरी प्रतिज्ञा।।

रचना
फ़राह हारून"वफ़ा" (प्र०अ०)
प्रा० वि० मढ़ियाभांसी
सालारपुर, बदायूँ

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

24

दुःशासन

कुरुवंश में पैदा हुआ,
धृतराष्ट्र की था वो सन्तान।
दुर्योधन से था वो छोटा,
उसको था बड़ा अभिमान।।

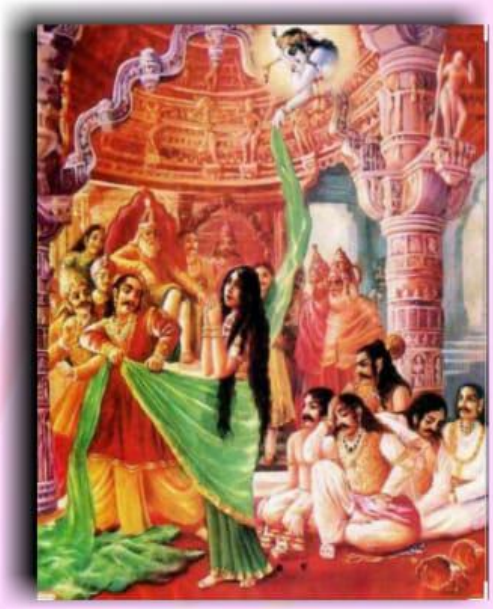

चीरहरण द्रोपदी का करके,
कुरुवंश को किया बदनाम।
रजस्वला के केश खींच के,
भरी सभा में किया अपमान।।

क्रुद्ध भीम की भीष्ण प्रतिज्ञा,
वध दुःशासन का किया।
छाती चीर के निकले लहू से,
भीम ने रक्तपान किया।।

मद में चूर रहा दुःशासन,
सही गलत न समझ पाया।
स्त्रीत्व का सम्मान न करके,
वीभत्स मृत्यु को गले लगाया।।

रचना
नीतू सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भुडेली
समरेर, बदायूँ

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

25

कृपाचार्य

भारतवर्ष में हुए अनेक आचार्य,
उनमें से हैं एक कृपाचार्य।
ब्रह्मा जी के चौथे अवतार,
महाभारत के मुख्य पात्र।।

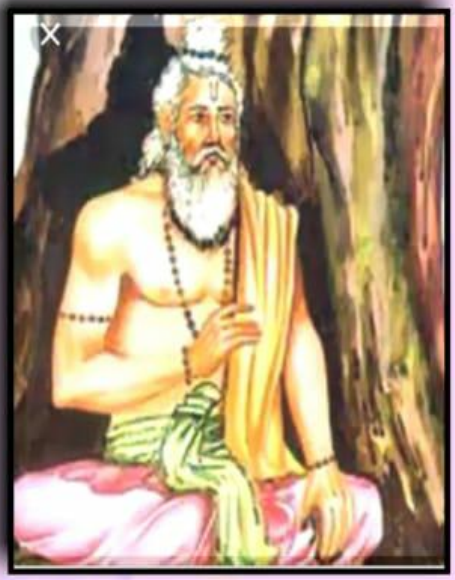

परमवीर धनुर्धर शरद्वान के पुत्र,
अंगिरस के वंशज, महर्षि गौतम के पौत्र।
जनपदी थी जननी, कृपी उनकी भगिनी,
इन्द्र भी डर गया देख पटुता इनकी।।

जब हुआ कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध,
कौरवों के साथ खड़े, लड़े पाण्डवों के विरुद्ध।
न्याय धर्म की आवाज हो गयी तब गूंगी,
जब बने अभिमन्यु की हत्या के सहयोगी।।

18 दिन युद्ध हुआ घमासान,
कौरवों का नष्ट हुआ खानदान।
युद्ध में कृपाचार्य जी की बच गयी जान,
चिरंजीवी रहने का था जो उन्हें वरदान।।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना
स्मृति परमार (स०अ०)
प्रा० वि० मामूरगंज
कादरचौक, बदायूँ

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

महाभारत के पात्र

26

बर्बरीक

भीम और हिडिंबा का पौत्र,
अहिलावती, घटोत्कच का पुत्र,
माँ आदिशक्ति का घोर पुजारी।
कहलाये "तीन बाण धारी"।।

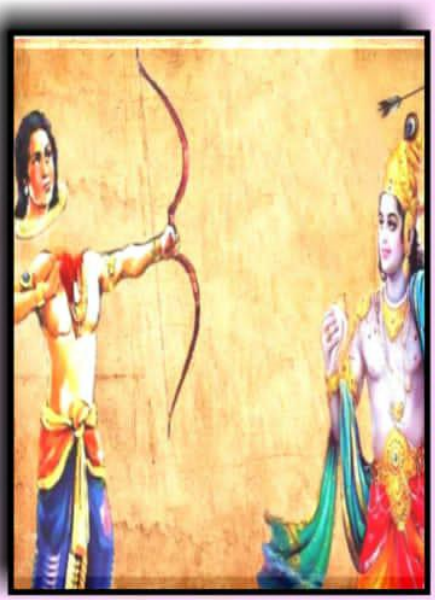

ईसापूर्तिक बाल्मीकि ने धनुष दिया अभयी,
जो बना सकता था उनको तीनों लोक विजयी।
श्रीकृष्ण की कूटनीति से रणचंडी की बलि चढ़ गए,
गुरु को गुरुदक्षिणा देकर अमरत्व प्राप्त कर गए।।

पारंगत थे बर्बरीक, युद्ध कौशल के नियमों में,
श्रीकृष्ण थे समझ गए निर्णय बदल सकते है ये।
श्रीकृष्ण ने समझाया निर्भय बर्बरीक को,
युद्धभूमि को चाहिए क्षत्रिय वीरवार शीश दो।।

श्रीकृष्ण की शिक्षा युद्धनीति और उपस्थिति,
सम्पूर्ण युद्ध विजय की इसने बदली है स्तिथि।
श्रीकृष्ण ने प्रसन्न हो दिया बर्बरीक को आशीष,
तुम मेरे नाम से कलयुग में होंगे प्रसिद्ध।।

रचना-
चंचल उपाध्याय (प्र०अ०)
प्रा० वि० कोट
बिसौली, बदायूँ

मिशन शिक्षण संवाद

महाभारत के पात्र

रचनाकारों की सूची

01- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
02- अरविन्द कुमार, वाराणसी
03- नैमिष शर्मा, मथुरा
04- रेनू, वाराणसी
05- शिखा वर्मा, सीतापुर
06- जितेन्द्र कुमार, बागपत
07- सीमा मिश्रा, फतेहपुर
08- अनुपम वर्मा, बाराबंकी
09- भुवन प्रकाश, सीतापुर
10- सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर
11- आकांक्षा मिश्रा, हरदोई
12- किरन, फतेहपुर
13- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
14- सुमन पांडेय, फतेहपुर
15- इला सिंह, फतेहपुर
16- सुप्रिया सिंह, सीतापुर
17- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
18- मंजू शर्मा, हाथरस
19- ज्योति सागर, बागपत
20- रीना कुमारी, बागपत
21- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
22- साधना, फ़तेहपुर
23- फराह हारून, बदायूँ
24- नीतू सिंह, बदायूँ
25- स्मृति परमार, बदायूँ
26- चचंल उपाध्याय,बदायूँ

तकनीकी सहयोग
आयुषी अग्रवाल, मुरादाबाद
मार्गदर्शनः- राज कुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलनः- मिशन शिक्षण संवाद